नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विवि में आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव विषय पर आयोजित तीन दिवसीय मीडिया संगोष्ठी सम्पन्न

मीडिया एक सिपाही, दृष्टा और सृष्टा की भूमिका में - प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा दि. 30 जुलाई 2015: आज की मीडिया सिपाही, दृष्टा और सृष्टा की भूमिका में है। यह समानांतर दूसरी दुनिया निर्माण करता है। यह इतना प्रभावी है कि आज के समय में यह सरकार तक तय कर रहा है। तय नहीं भी कर रह तो वह उसका माध्यम जरूर बन जा रहा है। मीडिया की बढ़ती

शक्ति पूंजी का निवेश होने के बावजूद इसका भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। आज के तनावपूर्ण माहौल में भी यह हमारी आदत और अभिव्यक्ति का हिस्सा बनकर उभरा है। इस शक्ति का उपयोग सकारात्मक रूप से किया जाए। मीडिया की दशा और दिशा को व्यक्त करते हुए इसमें लगाम कैसे लगाई जाए, इसका विस्तार कैसे किया जाए इसी विमर्श का आधार संगोष्ठी शीर्षक 'आध्यात्मिकता,

मीडिया और सामाजिक बदलाव' है। आध्यात्मिकता का अर्थ मीडिया में सामाजिक संवेदना और नैतिकता से है। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरिश्वर मिश्र ने व्यक्त किये। 'आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय संगोष्ठी का समाहार कुलपति की अध्यक्षता में हुआ।

समाहार सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में दैनिक भास्कर के समूह संपादक प्रकाश दुबे, मुख्य वक्ता के रूप में प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, जय महाकाली शिक्षण संस्थान, वर्धा के अध्यक्ष पं. शंकर प्रसाद अग्निहोत्री और प्रसिद्ध टीवी पत्रकार मुकेश कुमार मंच पर मौजूद थे।

विश्वविद्यालय के मीडिया एवं अध्ययन केंद्र द्वारा भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद के सहयोग से आयोजित तीन (28 से 30 जुलाई) दिवसीय संगोष्ठी में 15 राज्यों से आए प्रतिभागियों द्वारा कुल 245 शोध-पत्र पढ़े गए। इसके साथ ही सत्र की शुरुआत नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के शोधार्थी अभिषेक त्रिपाठी और मनोविज्ञान विभाग के पी-एच.डी. शोधार्थी महेश तिवारी द्वारा बनाई पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन पर आधारित बायोपिक डाक्यूमेंट्री फिल्म दिखाकर की गई। संगोष्ठी के दौरान भावेश कुमार द्वारा बनाए गए देश के विख्यात पत्रकारों और सामाजिक बदलाव से जुड़े महत्वपूर्ण लोग जैसे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम और

महात्मा गांधी, बाबूराव विष्णु पराड़कर, रवींद्रनाथ टैगोर, डॉ. बी. आर. अंबेडकर आदि के स्केच की प्रदर्शनी लगायी गयी थी।

मुख्य अतिथि प्रकाश दुबे ने पूर्व राष्ट्रपति कलाम को याद करते हुए कहा मीडिया लोगों चौकाना चाहता है परंतु सामाजिक बदलाव के लिए लोगों को झकझोरना होगा। मीडिया क्षेत्र में कार्य कर रहे और नए प्रवेशित छात्रों को मीडिया की समस्याओं से आगाह करते हुए उन्हें प्रोत्साहन के रूप में कहा कि हमें कोई भी एक ऐसा कार्य करना चाहिए जिस काम में औरों से ज्यादा आपकी भागीदारी हो। उन्होंने कहा कि व्यक्ति जीवन के अंत समय में जिससे प्रभावित होता है वह आध्यात्म है। अपने अच्छे विचार और निर्णय लेने से सामाजिक बदलाव की दिशा तय होगी।

प्रतिकुलपति चित्तरंजन मिश्र ने आज के समय में मीडिया पर उठते सवालों और संकटों को स्पष्ट करते हुए कहा कि सवाल उसी से पूछे जाते है और उम्मीदे उन्हीं से होती हैं जो जनसाधारण से सरोकार रखता है, और मीडिया इस सरोकार का वाहक है। मीडिया को प्रशासन के अहंकार को भी तोड़ने की शक्ति बनकर उभरना चाहिए तभी वह इस यथार्थ का सार्थक रूप होगा।

पं. शंकर प्रसाद अग्निहोत्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि मीडिया की परख चार चीजों से की जा सकती है। पहली मीडिया में यथार्थवादी सत्य समाहित होना चाहिए। दूसरा चित्त की शुद्धी होनी

चाहिए इसके लिए पहले विचारे, पहचाने और समझे उसके बाद अभिव्यक्त करें। तीसरा व्यवहारपरक शिक्षा प्राप्त करे। चौथा जीवन का आदर्श। उन्होंने मीडिया की नैतिकता पर कहा कि प्रकृति भी व्यक्त होना चाहती है और वह सुपात्र को खोजती है। आज के मायने में सच्चे पात्र और सच्चे सोच के साथ मीडिया को कार्य करना चाहिए।

प्रसिद्ध टीवी पत्रकार मुकेश कुमार ने कहा कि आज मीडिया में संशय, संकट नौकरी से नहीं जुड़ा है बल्कि मीडिया में आई बुराइयों से है। पत्रकारिता से जुड़े लोगों को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि पत्रकारिता के अहंकार से परिचित हो तभी आप लड़ सकेंगे।

समापन सत्र में पीएचडी शोधार्थी अनुपमा कुमारी सभी सत्रों की रिपोर्ट प्रस्तुत की। सत्र का आभार ज्ञापन संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय ने किया तथा संचालन सहायक प्रो. डॉ. अख्तर आलम ने किया।

समारोह में टीवी पत्रकार मुकेश कुमार की पुस्तक 'टीआरपी, न्यूज और बाजार' तथा विश्वविद्यालय के मीडिया के पूर्व शोधार्थी डॉ. गजेंद्र प्रताप सिंह की पुस्तक 'मानवाधिकार हनन और मीडिया', राहुल मीणा का पत्रकारिता कविता संग्रह 'कलम, कैमरा और कठपुतली पत्रकारिता' का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। समापन में बाहर से आए प्रतिभागियों को मंचस्थ अतिथियों द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किए गये।

गुरुवार को प्रथम सत्र में 'मीडिया का राजनीतिक अर्थशात्र, अभिव्यक्ति का विस्तार' पर चर्चा हुई। इसमें डॉ. अर्जुन तिवारी ने टीवी को सामान बेचने वाला औजार बताया और कहा कि आज समाचार पत्र में विज्ञापन इतने ज्यादा हो गए हैं कि समाचार उसमें फिलर के रूप में भरे जा रहे हैं। उन्होंने सवाल खड़ा करते हुए कहा कि क्या पत्रकार मालिकों का विरोध नहीं कर सकते। अगर पाठक चैतन्य हो जाए तो मीडिया में जो नकारात्मक बदलाव आया है उसे सुधारा जा सकता है। उन्होंने मीडिया के विद्रूप होने के पीछे इस साहित्य से इसका कटना कारण बताया। साथ ही उन्होंने मीडिया के सकारात्मक पक्ष की चर्चा की। सत्र में प्रो. श्याम कश्यप ने राजनेता, कॉरपोरेट और मीडिया के गठजोड़ को खतरनाक बताया। उन्होंने कहा कि इससे अभिव्यक्ति का विस्तार नहीं बल्कि संकुचन हो रहा है। आजादी से पहले इसका राजनीतिक अर्थशास्त्र समाज के लिए था लेकिन अब इसकी प्रवृति बदल चुकी है। अब यह पूंजीतियों और राजनेताओं के हाथों में चली गई है। विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कलाएं , नाट्यकला और फिल्म अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा ने सत्र का बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने मीडिया के राजनीतिक अर्थशास्त्र के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि मीडिया को संचालित करने लोग इसे उत्पाद मानते हैं तो इससे अभिव्यक्ति के विस्तार की उम्मीद कैसे की जाती है। उन्होंने आज के समय में समानांतर मीडिया की जरूरत की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया।

इन तीन दिनों के दौरान संगोष्ठी में जनमाध्यमों के सरोकरा, मीडिया के समकालीन प्रश्न, मीडिया संस्कृति एवं बाजार, आध्यात्मिकता और मीडिया एवं मीडिया का राजनीतिक अर्थशास्त्र : अभिव्यक्ति का विस्तार जैसे विषयों पर विचारकों ने अपने मत विद्यार्थियों और शोधार्थियों के सामने रखे।